25 / 01/ 80 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

"बिंदु (ज्ञान सिंधु परमात्मा) का बिंदु (आत्मा) से मिलन की अनुभूति"

➢➢ सर्व मुरलियों का सार एक ही शब्द है - "बिन्दु" जिसमे सारा विस्तार समाया हुआ है।

➳ _ ➳ मैं आत्मा स्वयं को बिंदु रूप में देख रही हूँ। बिंदु बन बिंदु को याद करती हूँ और जो कुछ भी बीत चुका है उसे सहज ही बिंदु लगाती जा रही हूँ।

→ मैं आत्मा बिंदु रूप में स्वयं को अति सूक्ष्म और अति शक्तिशाली अनुभव कर रही हूँ।

→ मैं सूक्ष्म फरिश्ता बन, मास्टर सर्व शक्तिवान का पार्ट बजा रही हूँ।

→ मैं सार रूप में स्वयं को त्रिकालदर्शी बनाने के दिव्य दर्पण के रूप में देख रही हूँ, जिस दर्पण द्वारा हरेक मनुष्य आत्मा, तीनो कालो को स्पष्ट देख सहज ही बाप से वर्सा लेने के लिए आकर्षित हो रही है।

■ इसी दिव्य दर्पण में मैं अपने पुरुषार्थ के हर समय के रिजल्ट को भी देख रही हूँ।

■ रिजल्ट का चित्र खिंचती हूँ - समर्थ के पोज और व्यर्थ के पोज दोनों दिखाई दे रहे है।

■ व्यर्थ का पोज - सदा युद्ध के रूप में योद्धे का पोज।

■ समर्थी स्वरूप में मैं मास्टर सर्वशक्तिवान व दिलतख्तनशीन सफ़लतामूर्त बनती जा रही हूँ।

➳ _ ➳ मैं प्रेम स्वरूप आत्मा हूँ। ज्ञान के साथ साथ प्रभु प्यार भी मिल रहा है।

→ रूहानी प्यार, प्रभु प्यार की गहराई से अनुभूति कर रही हूँ।

→ शिवशक्ति के कंबाइंड स्वरूप का अनुभव कर रही हूँ।

■ कर्मबन्धन से मुक्त मैं आत्मा डबल लाइट स्वरूप बनती जा रही हूँ।

■ संगमयुग पर मैं अपने श्रेष्ठ भाग्य को देख रही हूँ - बाप की मैं अमूल्य रत्न बन गयी हूँ।